संचित, प्रारब्ध एवं क्रियमाण कर्म

ग्रन्थकी भूमिका

'पिताकी आज्ञानुसार वनगमन करनेवाले श्रीरामसे जब भरतजीने अयोध्या लौटनेके लिए पुनः-पुनः विनती की, तब प्रभु श्रीरामने भरतको बताया कि मनुष्यका जीवन पराधीन है, अर्थात प्रारब्धके अधीन है ।

कर्मसिद्धान्तानुसार, मनुष्यको अपने उचित-अनुचित कर्मोंके सुख-दुःखरूपी फल इस जन्ममें अथवा अगले जन्ममें भोगने ही पडते हैं । पूर्व जन्मोंके जिन कर्मोंके फल भोगने शेष रह जाते हैं, वे मनुष्यके 'संचितकर्म' कहलाते हैं तथा उनमेंसे जितना फल मनुष्य इस जन्ममें भोगता है, उसे 'प्रारब्धकर्म' कहते हैं । 'बुद्धिः कर्मानुसारिणी ।' अर्थात, मनुष्यकी बुद्धिको प्रारब्धानुसार कर्म करनेकी प्रेरणा होती है । युधिष्ठिर महान धर्मज्ञानी थे, तब भी उन्होंने द्रौपदीको द्युतमें (जुएमें) दांवपर लगा दिया, इसका कारण प्रारब्ध ही था। प्रारब्धका भोग सभीको, यहांतक कि सन्तोंको भी भोगना ही पडता है । प्रारब्धको निष्प्रभ करनेका एकमात्र उपाय है, 'क्रियमाण कर्म'।

बुद्धि प्रारब्धके अनुसार आचरण करेगी अथवा नहीं, यह बुद्धिकी प्रगल्भता पर निर्भर करता है । बुद्धिकी प्रगल्भता सत्त्वगुणकी धारकतापर निर्भर है और सत्त्वगुणकी धारकता साधनापर निर्भर है । प्रारब्धका भोग भोगते समय व्यक्ति को अपने संस्कारोंके कारण सुख-दुःखका अनुभव होता है । परन्तु, यदि संस्कार ही नष्ट हो जाएं, तो सुख-दुःख अनुभव नहीं होगा । प्रारब्धानुसार देहभोग भोगना ही पडता है । किन्तु, यदि भोग का बोध ही न हो, तो फिर भोगका महत्त्व ही क्या ? साधनासे यही साध्य होता है । साधनासे संचित कर्म भी नष्ट होते हैं । इसलिए संचित और प्रारब्धकी अपेक्षा क्रियमाण कर्म निःसंशय श्रेष्ठ है ।

यह ग्रन्थ पढकर साधना हेतु अधिकाधिक क्रियमाणका उपयोग कर सभी शीघ्रातिशीघ्र ईश्वरतक पहुंचें, यही श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है ! – **संकलनकर्ता**

ग्रन्थकी अनुक्रमणिका

(कुछ विशेषतापूर्ण सूत्र [मुद्दे] '*' चिन्हसे दर्शाए हैं ।)

१. संचित कर्म ११

२. प्रारब्ध कर्म (दैव, भाग्य, नियति) १३

* परिभाषा एवं अर्थ १३
* प्रारब्धका महत्त्व एवं विशेषताएं १५
* प्रारब्धभोग भोगनेकी प्रक्रिया / कारण २२
* प्रारब्ध अपरिवर्तनीय, उसे भोगना अपरिहार्य २५
* प्रारब्धभोगपर विजय पाने हेतु – ज्योतिष, धर्माचरण, साधना तथा उन्नत पुरुष, गुरु एवं ईश्वर की कृपा आवश्यक ४०
* उन्नत पुरुष एवं प्रारब्ध ५७
* ईश्वर एवं मनुष्यका प्रारब्ध ६८
* मनुष्येतर प्राणिमात्रोंका प्रारब्ध ७०
* निर्जीव वस्तुओंका प्रारब्ध ७०

३. क्रियमाण कर्म ७१

* प्रारब्ध एवं क्रियमाण कर्म ७७
* क्रियमाण कर्मोंके परिणाम एवं उनकी अवधि ८७
* क्रियमाण कर्म एवं भक्तिका महत्त्व ९०
* क्रियमाण कर्म एवं ईश्वरीय (गुरु) कृपाका महत्त्व ९१
* क्रियमाण कर्मका परिणाम नष्ट करनेके उपाय ९२

४. संचित, प्रारब्ध एवं क्रियमाण कर्म नष्ट करने हेतु ज्ञानकी उपयुक्तता ९३

卐 **'संचित, प्रारब्ध एवं क्रियमाण कर्म' सम्बन्धी गहन ज्ञान** ९७

卐 **'अनिष्ट शक्तियोंसे होनेवाली पीडा' इस सम्बन्धी कुछ संज्ञाओंका अर्थ** ९९